वार्तालाप नं.471, हैदराबाद, दिनांक 27.12.07

Disc.CD No.471, dated 27.12.07 at Hyderabad

Extracts-Part-1

समयः 00.01-02.29

जिज्ञासुः शिवालय में पहले जाकर समझाओ, तुम इसपर पानी क्यों चढ़ाते हो। ऐसे बोलते हुए बाबा ने बोला गया तांड़े पर, मालिक बन बैठा। मतलब क्या है बाबा?

बाबा: जैसे कोई किचन में जाए आग लेने के लिए कि अपने चूल्हे की आग हमको दे दो। गया था मांगने के लिए और वहाँ किचन मास्टर बनके बैठ गया। तो गया था भीखमंगा बनके और बैठ गया मालिक बनके। तो ऐसे ही तुम जाओ शिवालय में, उन भक्तों को जाके पूछो कि तुम शिव के ऊपर पानी क्यों चढाते हो? और पानी भी कैसा? एक लोटा दूध में चुल्लू भर दूध और बाकी सारा पानी। तो वो तो बताय नहीं सकेंगे। तुम उनको बताओ कि भगवान बाप जब इस सृष्टि पर आते हैं, ज्ञान सुनाते हैं तो जो अधूरे ज्ञानी हैं, ज्ञान को पूरा समझते नहीं हैं, वो क्या करते हैं? जो बुद्धि रूपी लोटी पानी से भरी हुई है, उसमें थोड़ा सा ज्ञान जल डाला हुआ है, बाकी सारा ही पानी है। ऐसे पानी से भरी हुई बुद्धि रूपी लोटी को, लोटा नहीं। क्या? लोटी, माना कन्याओं को अर्पण करते हैं। उसकी यादगार में तुम आज भी क्या करते हो? आज भी तुम जड़ लोटी चढ़ाते हो। क्या? उसमें असली ज्ञान जल बहुत थोड़ा होता है और बाकी सब पानी ही पानी होता है। दूध के बिलोने से मक्खन निकलता है और पानी के बिलोने से कुछ भी नहीं निकलेगा।

Time: 00.01-02.29

Student: [Baba has said] First go to a temple of Shiv and explain [to the devotees], why do you pour water over it (i.e. the *Shivling*)? While saying so Baba said, He went to the kitchen and became a master of it. Baba, what does it mean?

Baba: For example, if someone goes to a kitchen to borrow fire [saying]: Give me some fire from your stove. He went to seek [fire] and he became the kitchen master there. So, he went as a beggar but became a master. So, similarly, you go to the temple of Shiv *(Shivalay)* and ask those devotees, why do you pour water over Shiv[*ling*]? And what kind of water is it? In a tumbler of milk, there is a handful of milk and the rest is water. So, they will not be able to reply. You tell them, when God the Father comes in this world, when He narrates knowledge, the incomplete knowledgeable ones, those who do not understand the knowledge completely, what do they do? The intellect in the form of small vessel *(loti)* which is full of water, it contains little water of knowledge (i.e. milk) and all the rest is water. Such intellect in the form of small vessel (*loti*) full of water; its not a big vessel (*lota*); what? *Loti* means that they offer the virgins. In its remembrance, what do you do even to this day? Even to this day, you offer physical small vessel full of water. What? There is very little true

water of knowledge and the rest is just water. Churning of milk produces butter and the churning of water will not produce anything.

समयः 02.33-07.00

जिज्ञासुः बाबा, कहते हैं शंकर लव में लीन हो कर रहता है, वो शिव से कैसे प्यार? मुरली में कहा है, प्यार तो शरीर के साथ होता है। बिन्दी के साथ प्यार कैसे होता है?

बाबा: अच्छा, चलो शंकर की बात छोड़ दो। शंकर की बात बाद में उठायेंगे। कोई भी मनुष्य को उठाओ। पहले-2 हर मनुष्य को अपनी आत्मा से प्यार होता है। अपन से प्यार होता है। फिर किससे प्यार होता है? नेक्स्ट टू आत्मा, फिर किससे प्यार होता है? अपनी देह से प्यार होता है। पहले अपन से प्यार फिर अपनी देह से प्यार होता है। तो ऐसे ही शिव आत्मा है और शिव जिसमें प्रवेश करता है वो देह है और देह उसकी अपनी नहीं है। क्या? अपनी देह है क्या? अपनी नहीं है फिर भी उसको अपना लेता है। क्या? उसको अपना लेता है या किराया देके अलग कर देता है? अपना लेता है। आदि से लेकरके अंत तक मुकर्रर बना के रखता है।

Time: 02.33-07.00

Student: Baba, it is said that Shankar remains immersed in love [of Shiv]; how does he love Shiv? It has been said in *Murli*, love happens with the body. How can someone love a point?

Baba: OK, leave aside the topic of Shankar. We will raise Shankar's point later on. Take the case of any human being. First of all, every human being loves his soul. He has love for himself. For whom does he love next? For whom does he love next to the soul? He has love for his own body. First he has love for himself and then for his body. So, similarly, Shiv is the soul; and the one in whom Shiv enters is a body and the body is not His own. What? Is it His own body? It is not His own body; even then He adopts it. What? Does He adopt it or does he pay the rent [for it] and separate it [from Himself]? He adopts it. He makes it permanent since the beginning to the end.

तो जिसका तन है वो तनधारी अपना तन उसे एवर लास्टिंग हमेशा के लिए अर्पण कर देता है या ये समझता है कि मैं किराया लेके अलग हो जाऊंगा? दलाली लेके अलग हो जाऊंगा? एवर लास्टिंग देता है ना? तो जिस तन में वो सुप्रीम सोल प्रवेश करता है उस तन में याद नहीं कर सकता? कर सकता है। क्योंकि सबसे पहले तो हर एक को अपनी देह से प्यार होता है और वो प्यार तब और ज्यादा बढ़ जाता है जबकि भगवान के कार्य में लग जाए। ईश्वरीय सेवा में लग जाए। गायन भी है, जहाँ हमारा तन होगा, वहाँ हमारा मन होगा। अरबपति व्यक्ति अपना सारी जिन्दगी का कमाया हुआ अरबों रुपया किसी कारखाने में लगा दे और विदेश में चला जाए तो उसका मन कहाँ जाएगा? कारखाने में जाएगा ना? तो शंकर अपने ही तन के द्वारा उस तन में प्रवेश किए हुए निराकार बाप

को याद नहीं कर सकता? कर सकता है। बल्कि दूसरे को याद करना मुश्किल होता है और अपने में याद करना तो सहज होता है। वो ही बिन्दु अपनी आत्मा के रूप में भृकुटी में याद करना सहज है या दूसरे स्थान पर दूसरे व्यक्ति में याद करना सहज है? अपने में याद करना, आत्मा को याद करना बहुत सहज है। इसलिए कहते हैं पहले अपन को क्या समझो? आत्मा समझो। तो शंकर को याद करना सहज है या और आत्माओं को याद करना सहज है? शंकर को याद करना तो और भी सहज है।

So, the one who owns the body, does that bodily being surrenders his body to Him everlastingly, forever or does he feel, I will collect the rent and dissociate? [Does he think] I will dissociate after taking the commission (*dalali*)? He gives it everlastingly, doesn't he? So, can't he remember [Him] in the body in which the Supreme Soul enters? He can, because first of all everyone loves his own body and that love increases further when it is invested in God's task, when it is used for Godly service. It is also sung, wherever our body is, our mind will go there. If a millionaire invests millions of rupees earned by him throughout the life, in a factory and if he goes abroad; where will his mind go? It will towards the factory, will it not? So, can't Shankar remember that incorporeal Father who has entered in the body through his own body? He can. Rather, it is difficult to remember in someone else and it is easy to remember in oneself. Is it easy to remember the same point as our soul in the middle of our forehead or is it easy to remember in some other place in some other person? It is very easy to remember in ourself, to remember the soul. This is why it is said, what should you think yourself to be first? Consider yourself to be a soul. So, is it easy for Shankar to remember [Shiv] or is it easy for other souls to remember [Shiv]? It is much easier for Shankar to remember [Shiv].

समयः 07.05-15.00

जिज्ञासुः बाबा, कहते हैं राम वाली व्यक्तित्व की अनिश्चय रूपी मृत्यु नहीं होती है। इसलिए उनको अमरनाथ कहते हैं माना उनको निश्चय बिन्दी पर है या किसी और पर है? किसी के ऊपर है? बिन्दी पर निश्चय और अनिश्चय होने की बात ही नहीं।

Time: 07.05-15.00

Student: Baba, it is said that the personality of Ram does not face the death in the form of doubt. This is why he is called *Amarnath* (lord of immortality), it means, does he have faith on a point or on anything else, on someone? There is no question of having faith or losing faith on a point at all.

बाबा: जिसको अपने पार्ट पर निश्चय हो जाए, वो अपनी आत्मा के ऊपर निश्चय हो जाना ये बाप के बगैर हो सकता है क्या? बच्चा जब तक ये न पहचाने कि मैं किसका बच्चा हूँ, किस कुल का हूँ तो उसको अपना आत्माभिमान, अपने कुल का अभिमान पैदा होगा? स्वाभिमान जागेगा? मिसाल

दिया जाता है: एक राजा का बच्चा कोई कारणे-अकारणे जंगल में खो गया और भेडियों के बीच में रहने लगा, बचपन से ही; और बड़ा हो गया तब तक वो अपने को क्या समझता रहा? भेड़िया हूँ। भेड़ियों जैसी चलन बन गई, भेडियों जैसा शरीर बन गया लेकिन जब उसको पता चला कि मैं तो अमुक बाप का बच्चा हूँ, राजा का बच्चा हूँ तो बात बदल गई। तो ऐसे ही है। द्वापरयुग से हम भेडियों के संग में आते-2 जानवर बन गए। जानवरों से भी बदतर बन गए।

Baba: The one who develops faith on his part, is it possible to develop faith on one's soul without the Father? Unless a child realizes as to whose child he is, to which clan he belongs, will he develop the soul consciousness, the pride for his clan? Will he develop self-respect? An example is given: if the child of a king is lost in a jungle due to some reason or the other and started living amongst wolves, since his very childhood; what did he considered himself to be till he grew up ? I am a wolf. His behavior became like wolves; his body became like the body of wolves, but when he came to know that I am a child of such and such father; I am the child of a king; the topic changed. So, it is in the same way. Since the Copper Age, we became animals while coming in the company of wolves. We became worse than animals.

अभी बाप ने हमको परिचय दिया है। तो परिचय पाने वालों में जिस मुकर्रर रथ में बाप प्रवेश करते हैं, सबसे नजदीक कौन है? सुप्रीम सोल बाप के नजदीक कौन है? जिस तन में प्रवेश करते हैं वो सबसे जास्ती नजदीक। जैसे कहते हैं ब्रह्मा के तन में प्रवेश करके मुरली चलाता हूँ। तो पहले किसके कान सुनते हैं? ब्रह्मा के कान सुनते हैं। परंतु ब्रह्मा उर्फ कृष्ण की आत्मा बच्चा बुद्धि; तो सुनती तो है लेकिन समझती नहीं और राम की आत्मा तो राम बाप कहा जाता है। सारी मनुष्य सृष्टि का बाप है। उसमें प्रवेश करते हैं, तो वो सिर्फ़ सुनता ही नहीं है, नजदीक होकर समझता भी है। सच्चाई को देखता भी है। तो नजदीक होने के कारण उस स्वरूप में भी जल्दी टिक जाता है। अपने कुल की, अपने स्वरूप की स्मृति आ जाती है।

Now the Father has given us the introduction. So, among those who receive the introduction, the appointed chariot in whom the Father enters; who is closest? Who is closest to the Supreme Soul Father? The body in which He enters is the closest. For example, He says, I enter in the body of Brahma and narrate *Murli*. So, whose ears listen first? Brahma's ears listen first. But Brahma alias Krishna's soul has a child-like intellect. So, it does listen, but it does not understand and the soul of Ram is called the father Ram. He is the father of the entire human world. When He enters him, he not just listens, but also understands, being close. He also sees the truth. So, because of being close, he also becomes constant in that form soon. He recollects the memory of his clan, his form.

जिज्ञासु: वो पहचान कैसे कर पाता होगा?
बाबा: कोई व्यक्ति में भूत प्रवेश करता है। जब भूत प्रवेश करता है तो उसके चलन में फर्क आता है या नहीं? वो समझता भी है मेरे अन्दर कोई आत्मा प्रवेश है और प्रवेश की हुई आत्मा उसकी बुद्धि को भी घुमाती है। वो अनुभव करता है कि किसी ने हमारी बुद्धि को घुमाया और बार-2 प्रवेश करता है, बार-2 बुद्धि को घुमाता है तो जो उसका मानसिक वातावरण है, वायब्रशन है वो बदल जाता है या नहीं? थोडे समय में वो वातावरण भी उसका बदलता है, वायब्रेशन भी बदलता है और यहाँ तो भूत नहीं प्रवेश करता। यहाँ ब्राह्मणों की दुनिया में प्रवेश करने वाला कौन है? स्वयं भगवान बाप प्रवेश करता है। लेकिन जिसमें प्रवेश करता है वो भी नहीं जानता है कि कौन प्रवेश करता है कि नहीं प्रवेश करता है। क्यों? क्योंकि बताय दिया है, मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है? जब ज्ञान सुनाते हैं।
Student: How would he be recognizing?
Baba: Suppose a ghost enters a person. When the ghost enters, does any difference appear in his behavior or not? He also understands that a soul has entered in me and the soul that has entered moulds his intellect as well. He experiences that someone has moulded his intellect and it enters again and again and moulds his intellect repeatedly. So, does his mental atmosphere, the vibrations change or not? Within a short time his atmosphere changes as well as the vibrations change; and here it is not a ghost who enters. Who enters here in the world of Brahmins? It is God the Father Himself who enters. But even the one in whom He enters does not know as to whether someone enters or not. Why? Because it has been said, how do we come to know that God the Father is present in him? It is when he narrates the knowledge.

तो सन् 76 से पहले ज्ञान सुनाते हैं, बेसिक नॉलेज में आने मात्र से ही राम वाली आत्मा ज्ञान सुनाती है या बाद में सुनाती है? (किसी ने कहा: बाद में सुनाती है।) ब्रह्मा के तन में भी, दादा लेखराज के तन में भी सन् 36 से ही ज्ञान सुनाना शुरु कर दिया था या सन् 47 से पता चला कि इनमें बाप भगवान है? 47 से पता चला। इसी तरह ब्रह्मा के शरीर छोड़ने के बाद ब्राह्मणों के इस काँटों के जंगल में ब्रह्मा के बाद ऐसे नहीं कि कोई दूसरा होता नहीं है। होता तो है परंतु प्रत्यक्ष नहीं होता क्योंकि वाणी चलती नहीं है। अव्यक्त पार्ट रहता है, और वो अव्यक्त कब से प्रत्यक्ष होता है? जब से बाप का प्रत्यक्षता वर्ष मनाया जाता है। तो कैसे पता चलता है इनमें बाप भगवान है? जब एडवांस ज्ञान सुनाते हैं। तो पता चलता है, सब स्वीकार करते हैं कि ऐसा ज्ञान तो और कोई ब्रह्मणों में सुनाय ही नहीं सकता। ये तो भगवान बाप स्वयं आ करके क्लेरिफिकेशन दे रहा है टीचर के रूप में। तो औरों को पता चलेगा, जिसमें प्रवेश करता है उसको पता नहीं चलेगा?

उसको तो और भी पहले पता चल जायेगा। निश्चय होता ही है बाप के ऊपर, निश्च्य होता ही है अपनी आत्मा के ऊपर और निश्चय होता ही है ड्रामा के ऊपर। कितनी बातों के ऊपर निश्चय? आत्मा के ऊपर निश्चय, आत्मा के बाप के ऊपर निश्चय और अपने पार्ट और आत्मा जिस ड्रामा में पार्ट बजाती है उस ड्रामा के ऊपर पक्का निश्चय पैदा हो जाए। उसको कहते हैं निश्चय बुद्धि विजयते।

So, does he narrate the knowledge before the year [19]76, does the soul of Ram narrate knowledge just by entering the path of basic knowledge or does it narrate later on? (Someone said: he narrates later on.) Even in the body of Brahma, even in the body of Dada Lekhraj, did He start narrating knowledge since the year [19]36 itself or did they come to know since the year [19]47 that God the Father is present in him? They came to know since [19]47. Similarly, after Brahma left his body, it is not that there is no other person in this jungle of thorns of Brahmins after Brahma. He is indeed present, but he is not revealed because he does not narrate *vani*. The part remains *avyakt* (unmanifest) and since when is that [one who is] *avyakt* revealed? [The *avyakt* one is revealed] ever since the year of revelation of the Father is celebrated. So, how do we come to know that God the Father is present in him? When he narrates the advance knowledge. Then we come to know, everyone accepts that nobody else among the Brahmins can narrate at all such knowledge. It is God the Father Himself who has come and is giving clarification in the form of a Teacher. So, [when] others come to know, [will] the one in whom He enters not come to know? He will come to know much earlier. The very faith is on the Father; the very faith is on our soul and the very faith is on the drama. Faith on how many things? We should develop firm faith on the soul, faith on the Father of the souls and faith on our part and the drama in which the soul plays its part. That is called 'the one with a faithful intellect gains victory'.

Extracts-Part-2

समयः 15.03-25.13

जिज्ञासुः बाबा, शंकरजी के भृकुटी में उनकी अपनी आत्मा अलग और शिव की आत्मा अलग दिखती है या दोनों मिलकर एक दिखती है?

बाबा: किसको?

जिज्ञासु: शंकर।

बाबा: पहली बात तो ये है कि ब्रह्मा की आत्मा को माना ब्रह्मा उर्फ कृष्ण बच्चे की आत्मा को राम की आत्मा के साथ जिसे राम बाप कहा जाता है, उससे टैली किया जा सकता है? और टैली करे तो 100% वास्ट अंतर दिखाई पडेगा या साम्यता दिखाई पडेगी? अंतर दिखाई पडेगा। क्या अंतर

दिखाई पडेगा? जो बाप ने बोला है कि ये जो साधु, सन्यासी, गुरु होते हैं, वो अपन को ही भगवान समझ के बैठ जाते हैं। वो ज्ञानी हुए या अज्ञानी? अज्ञानी। क्योंकि बाप ने कहा है जो अपन को भगवान कहते हैं वो बडे ते बडे हिरण्यकाश्यप है। तो ब्रह्मा की आत्मा क्या समझ के बैठ गई? कि भगवान का साकार रूप इस सृष्टि पर अगर कोई है गीता का भगवान तो वो कौन है? ब्रह्मा की आत्मा यही समझती है कि मैं गीता का भगवान शिवोऽहम हूँ। वो खुले आम कहते भी थे कि मेरे अन्दर भगवान आता है, मैं भगवान के रथ को स्नान कराता हूँ। लेकिन जो ज्ञानी आत्मा होगी; बाप ज्ञान का सागर तो बाप का बच्चा भी मास्टर ज्ञान सागर होना चाहिए।

Time: 15.03-25.13

Student: Baba, does *Shankarji* see his soul and Shiv's soul separately in the middle of the forehead *(bhrikuti)* or does he see both of them as one?

Baba: To whom?

Student: Shankar.

Baba: The first thing is that, can Brahma's soul, i.e. Brahma alias child Krishna's soul be tallied with the soul of Ram who is called the father Ram? And if we tally both of them, will we find a 100% vast difference or will we find a similarity? We will find a difference. What difference will we find? The Father has said that these sages, *sanyasis*, *gurus* think themselves to be God. Are they knowledgeable ones or ignorant? [They are] ignorant; because the Father has said that those who call themselves as God are the biggest *Hiranyakashyaps* (a villainous character mentioned in the scriptures who declared himself as God). So, what did Brahma's soul think itself to be? [It thought] that if there is any corporeal form of God, God of the Gita in this world, who is it? Brahma's soul thinks that I am God of the Gita, I am Shiv *(Shivoham)*. He even used to declare openly: God comes in me; I bathe the chariot of Shiv. But a knowledgeable soul; when the Father is an ocean of knowledge, the Father's child should also be the *master* ocean of knowledge (*master*: the one who does in practical).

जब बाप अपने को गुप्त करके संसार में आता है तो बाप को फॉलो करने वाला अव्वल नम्बर बच्चा वो अपने को गुप्त रखेगा या प्रत्यक्ष करेगा? गुप्त रखेगा। तुम्हारा ज्ञान, मान, पद, पुरुषार्थ, दान सब कुछ गुप्त। तो राम वाली आत्मा जिसमें भगवान बाप, बाप के रूप में प्रत्यक्ष होता है वो स्वप्न में भी ऐसा नहीं सोच सकती कि मैं भगवान बाप हूँ या मेरा शंकर का पार्ट है या मेरा प्रजापिता का पार्ट है या मैं संगमयुगी कृष्ण हूँ, मेरा नारायण का पार्ट है, मैं शिव हूँ। जब स्वप्न में भी नहीं आ सकता तो स्वप्न मात्र सो संकल्प मात्र भी नहीं आ सकता। पहले संकल्प में आता है फिर वाचा में आता है, फिर प्रैक्टिकल में भी जरूर आवेगा।

When the Father comes in this world in a secret form, will the number one child who follows the Father keep himself hidden or will he reveal himself? He will keep himself hidden. Your knowledge, respect, post, *purusharth* (special effort for the soul), donation, everything is secret. So, the soul of Ram through whom God the Father is revealed in the form of the Father cannot think even in his dreams that I am God the Father or my part is that of Shankar or part is that of Prajapita or that I am the Confluence Age Krishna, my part is that of Narayan; I am Shiv. When it can't come even in his dreams, then as the dreams, it cannot emerge in his thoughts either. First it emerges in the thoughts, then in words and then it will certainly emerge in *practical* too.

जिज्ञासु: ब्रह्मा बाबा अपने को भगवान का साकार रूप मानता है तो फिर उनको धारणाओं का राजा का उपाधि रिवार्ड कैसे दिया गया?

बाबा: कहते हैं भगवान इस सृष्टि की माता भी है, इस सृष्टि का पिता भी है। उसको कहते हैं त्वमेव माता च पिता त्वमेव। तो माता के रूप में सहनशक्ति का पार्ट कृष्ण की आत्मा बजाती है या शिव की आत्मा बजाती है? अगर ब्रह्मा उर्फ कृष्ण की आत्मा ने सहनशक्ति का पार्ट बजाया होता सारे सृष्टि की बडे ते बडी़ माँ का पार्ट बजाया होता तो 63 जन्म में भी बजा लिया होता। 63 जन्म में भी सबका दिल जीत लिया होता। परंतु ऐसा हुआ क्या? नहीं हुआ।

Student: If Brahma Baba considers himself to be the corporeal form of God, then how has he been given the reward (title) of king of virtues *(dharnao ka raja)*?

Baba: People say that God is the Mother as well as the Father of this world. He is called *'twamev mata cha pita twamev'*. So, does the soul of Krishna or the soul of Shiv play the part of tolerance in the form of a mother? Had the soul of Brahma alias Krishna played the role of tolerance, had he played the part of the biggest mother of the entire world, it would have played such a part in 63 births as well. It would have won everybody's heart in 63 births as well. But did it happen so? It did not.

तो ये तो सोचना ही गलत है कि ब्रह्मा के अन्दर जो भी पार्ट चला धारणाओं का वो ब्रह्मा की सोल ने बजाया। नहीं। कौन बजाता है? बाप बजाता है। अभी भी कहते हैं तमोप्रधान आत्मा सेवा करती है या बापदादा सेवा करते हैं? (किसी ने कहा: बापदादा करते है।) तो जैसे अभी बात ये लागू होती है वैसे उस समय भी ये बात लागू होती है कि कृष्ण की आत्मा अंतिम जन्म में तमोप्रधान होती है या सतोप्रधान? तमोप्रधान। और अभी भी तमोप्रधान कहे या सतोप्रधान? तमोप्रधान कहे। तो तमोप्रधान आत्मा ईश्वरीय सेवा नहीं कर सकती। ईश्वरीय सेवा कौन करता है? सतोप्रधान आत्मा ही प्रेरित करती है सेवा करने के लिए। बाकि तमोप्रधान आत्मा तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, इन एक्टिविटी से ही फुर्सत नहीं मिलेगी।

So, it is wrong to think that whatever part of virtues was played through Brahma was played by Brahma's soul. No. Who plays that part? The Father (i.e. Shiv) plays that part. Even now it is said, does a tamopradhan soul (dominated by darkness or ignorance) do service or does Bapdada do service? (Someone said: Bapdada does it). So, just as it is applicable now, this point is applicable for that time as well; is the soul of Krishna *tamopradhan* or is it *satopradhan* (consisting mainly in the quality of goodness and purity) in its last birth? [It is] *tamopradhan*. Moreover, even now should it be called *tamopradhan* or *satopradhan*? It should be called *tamopradhan*. So, a *tamopradhan* soul cannot do Godly service. Who does Godly service? It is the *satopradhan* soul which inspires to do service. As regards the *tamopradhan* soul, it will not have time for anything other than the activities of lust, anger, greed, attachment, and ego.

जिज्ञासु: अगर ब्रह्मा बाबा ने ये धारणा किया तो ये गलत धारणा है। तो फिर धर्मराज का पार्ट शिव ही बजाएगा ना?

बाबा: पार्ट साकार में गाया जाता है या आकार और निराकार में गाया जाता है? पार्ट किसे कहते हैं? पार्ट सूक्ष्म वतन में चलता है, सूक्ष्म शरीरधारी का पार्ट गाया जाता है या साकार शरीरधारी का पार्ट गाया जाता है?

जिज्ञासु: जगदम्बा में प्रवेश करके करता होगा।

बाबा: जगदम्बा में भी प्रवेश करने वाला साकार आत्मा है, आकारी आत्मा है, अव्यक्त पार्टधारी है या व्यक्त आत्मा है?

जिज्ञासु: व्यक्त आत्मा है।

बाबा: व्यक्त आत्मा है? अव्यक्त आत्मा है। उसका अपना शरीर तो है ही नहीं। आत्मा का नाम पड़ता है या शरीर का नाम पड़ता है? नाम किसका होता है? शरीर का नाम होता है। तो जगदम्बा का नाम होता है। ये कोई नहीं कहता कि ब्रह्मा ने महाकाली का पार्ट बजाया क्योंकि ब्रह्मा की तो **आत्मा** काम करती है। शरीर किसका है? जगदम्बा का। नाम काम के आधार पर पड़ता है और काम सिर्फ आत्मा नहीं करती। आत्मा को क्या चहिए? शरीर भी चहिए।

Student: If Brahma Baba inculcated this, then it is a wrong inculcation; so Shiv alone will play the part of *Dharmaraj* (the Chief Justice), will He not?

Baba: Are parts played in corporeal form or in subtle and incorporeal form? What is meant by a part? Is a part played in the subtle world, is there the praise of the part of a subtle bodily being or is there the praise of the part of a corporeal bodily being?

Student: He must be playing a part by entering in *Jagdamba*.

Baba: Even the soul which enters *Jagdamba*, is it a corporeal soul, a subtle soul, an *avyakt* actor or a *vyakt* soul?

Student: It is a *vyakt* soul.

Baba: Is it a *vyakt* soul? It is an *avyakt* soul. He does not have his own body at all. Is a soul named or is a body named? Who has a name? A body has a name. So, *Jagdamba* becomes famous. Nobody says that Brahma played the part of *Mahakali* (a Goddess) because it is the **soul** of Brahma that works. Whose body is it? *Jagdamba's* body. Names are given on the basis of the task performed and it is not just the soul that acts. What does a soul require? It requires a body as well.

जिज्ञासु: ऐसे कहा है जगदम्बा तो इंस्ट्रुमेंट है।

बाबा: ये ज्ञानियों के समझने की बात है और दूसरों को समझाने की बात है। जैसे हम ब्राह्मण अभी तक ये नहीं जानते। जब महिमा करने पे आते हैं तो ब्रह्मा ही ब्रह्मा नजर आता है। ये बुद्धि में नहीं आता कि सहनशक्ति का पार्ट किसने बजाया? किसने बजाया?

जिज्ञासु: शिव ने बजाया।

बाबा: ये तो अभी जानते हैं ना?

जिज्ञासु: बाप ने समझाया तब ही तो पता चला ना?

बाबा: नहीं, पहले नहीं जानते थे ना? नहीं जानते थे तो अज्ञानी थे ना? तो ऐसे ही ये अज्ञानियों और ज्ञानियों की समझने और समझाने की भाषा है कि जगदम्बा तो डब्बा है। वास्तव में सहनशक्ति के रूप में पार्ट बजाने वाला शरीरधारी कौन है? जगदम्बा है या दादा लेखराज ब्रह्मा है? (सभी ने कहा - दादा लेखराज ब्रह्मा।) दादा लेखराज ब्रह्मा है।

Student: It has been said that *Jagdamba* is an instrument.
Baba: It is something to be understood by the knowledgeable ones and explaining to the others. For example, we Brahmins do not know this till now. When we start praising we see just Brahma everywhere. It does not strike our intellect as to who played the part of tolerance? Who played it?
Student: Shiv played it.
Baba: We know this **now**, don't you?
Student: We came to know only when the Father explained, didn't we?
Baba: No. Earlier, we did not know, did we? We did not know so, we were ignorant, weren't we? Similarly, this is a language to be understood and explained by the ignorant ones and the knowledgeable ones that *Jagdamba* is a box. Actually, who is the bodily being who plays the part of tolerance? Is it *Jagdamba* or Dada Lekhraj Brahma? (Everyone said – Dada Lekhraj Brahma). It is Dada Lekhraj Brahma.

जिज्ञासु: बाबा, क्लीयर नहीं होता।

बाबा: क्या क्लीयर नहीं होता?

जिज्ञासु: अभी कहा ब्रह्मा द्वारा सहनशक्ति का पार्ट शिव ने बजाया।

बाबा: तो शिव ने बजाया लेकिन शिव का अपना शरीर है?

जिज्ञासु: नहीं है।

बाबा: जिसका शरीर ही नहीं है उसका काम कहा जायेगा? काम किस आधार पर होता है? काम के आधार पर नाम होता है ना? तो जो नाम पड़ा 'ब्रह्मा' वो ब्रह्मा नाम शिव का है? ... शिव का तो नाम एक ही है। क्या? 'मेरा नाम तो शिव ही है। वो कभी बदलता ही नहीं।' कब बदलता है?

जिज्ञासु: जब शरीर बदलते हैं तो...

बाबा: तो दादा लेखराज का शरीर बदल गया तो नाम भी बदल गया।

Student: Baba, it is not clear.
Baba: What isn't clear?
Student: Just now you said that Shiv played the part of tolerance through Brahma.
Baba: Shiv played that part, but does Shiv have His own body?
Student: He doesn't have.
Baba: Will the one who does not have a body at all, be said to have performed the task? On what basis is a task performed? The name is based on the task performed, isn't it? So, does the name 'Brahma' belong to Shiv? ..... Shiv has only one name. What? 'My name is only Shiv. It never changes.' When does it change?
Student: When the bodies change……
Baba: So, Dada Lekhraj's body changed so, the name also changed.

Extracts-Part-3

समयः 25.16-28.58

जिज्ञासुः बाबा, मुरलियों में कहा गया है देह और देह सहित सब सम्बन्ध छोड़ दो एक बाबा को याद कर और दूसरे मुरलियों में कहा है सर्व सम्बन्धों से बाबा को याद कर।

बाबा: ठीक है।

जिज्ञासु: सर्व सम्बन्धों से बाबा को याद करना है। अगर नहीं करे तो ये जन्म में वो सम्बन्ध छूट जायेगा...

बाबा: छूट जायेगा और उसका मजा ही नहीं आएगा। उस सम्बन्ध के प्यार के लिए तड़पते रहेंगे। तो इसमें विरोधाभास आपको कहाँ दिखाई दे रहा है?

जिज्ञासु: देह सम्बन्ध छोड़ना और सब समबन्ध.....।

बाबा: कमाल है। जिसे आप प्यार करने की बात, एक को प्यार करने की बात कर रहे हैं वो देहधारी है, उसकी बुद्धि देह में धरी रहती है या देह से परे रहने वाला है?

जिज्ञासु: देह से परे रहने वाला।
Time: 25.16-28.58
Student: Baba, it has been said in *Murlis*, leave the body and all the bodily relationships along with the body and remember one Baba and in another *Murlis* it has been said, we should remember Baba in all the relationships.
Baba: It is correct.
Student: We have to remember Baba in all the relationships. If we don't remember, that relationship will be left [to be experienced] in this birth……..
Baba: It will be left and we will not enjoy that [relation] at all. You will keep longing for that relationship. So, where do you find the contradiction in this [two statements]?
Student: Leaving the bodily relations and all the relations……
Baba: It is surprising! The one whom you love, the subject of loving the One, is He a bodily being, does His intellect remain entangled in the body or is He the one who remains detached from the body?
Student: He remains detached from the body.

बाबा: तो आपने उसको देहधारी कैसे समझ लिया? जिससे आपको सम्बन्ध जोड़ना है वो विदेही है या देहधारी है? विदेही है ना? जो देहधारी होता है उसका ये स्वभाव-संस्कार होता है; देहधारी माना जिसकी बुद्धि देह में धरी रहे। उसका यह स्वभाव-संस्कार होता है कि जिस देह से सम्पर्क सम्बन्ध जोडेगा उसकी उसे याद आती रहेगी। क्या? आँखों से देखेगा तो याद जरूर करेगा उसको। लेकिन वो ऐसा विदेही है; धर्मपिताओं की तरह नहीं है। धर्मपितायें भी इस सृष्टि पर आते हैं निराकारी दिखाई पड़ते हैं। चेहरे से कैसे दिखाई पड़ते हैं? निराकारी दिखाई पड़ते हैं। लेकिन पहला जन्म जब उनका पूरा होता है तो अंजाम क्या होता है? देहधारी रहते हैं या विदेही बनके रहते हैं? देहधारी बन जाते है। क्यों? देह में लगाव लग गया और यहाँ क्या है? यहाँ भगवान बाप, बाप के रूप में जिस तन के द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं वो लगाव वाला पार्ट नहीं है, देह में बुद्धि धरी नहीं रहती है। कितनी भी देहधारियों से सम्पर्क सम्बन्ध जोडे, परंतु कैसा पार्ट बजाता है? विदेही पार्ट बजाता है। कोई लगाव नहीं, कोई अटैचमेंट नहीं। इसलिए बोला कि बाप आशुक बन करके आता है या माशूक बनके आता है? (किसी ने कहा: माशूक बनके।) क्यों? आशिक जो होता है वो दूसरे के ऊपर आसक्त हो जाता है, लगाव पैदा हो जाता है, और माशूक? एक माशूक से अनेकों आशिक हो जाते हैं। तो ये तो ऐसा बेहद का माशूक है जो किसी में खुद नहीं फँसता लेकिन 500-700 करोड़ की जो भी दुनिया है, चाहे सजा खाने वाले हैं और चाहे सजा न खाने वाले हैं, सबकी बुद्धि उस एक में इतनी आसक्त हो जायेगी कि सब उसके पीछे-2 जावेंगे। कहाँ जावेंगे? घर में जायेंगे।

Baba: So, how did you consider Him to be a bodily being? The one with whom you have to establish relationship, is He bodiless (*videhi*) or a bodily being (*dehdhari*)? He is bodiless, isn't He? A bodily being has this nature and *sanskar*; bodily being (*dehdhari*) means the one whose intellect remains entangled in a body. It has the nature and *sanskar* that it will keep remembering the body with which it establishes contact and connection. What? If he sees someone through the eyes, he will certainly remember him/her. But He is such a bodiless one; He is not like the religious fathers. When the religious fathers also come in this world; they appear to be incorporeal. How does their face appear? They appear to be incorporeal, but what is the result when their first birth is over? Do they remain a bodily being or do they remain bodiless? They become bodily beings. Why? They developed attachment for the body. And what is the case here? Here, the body through which God the Father, is revealed in the form of the Father, does not play a part of attachment; his intellect does not remain entangled in the body. He may establish contact and relationship with any number of bodily beings, but what kind of a part does he play? He plays a bodiless part. There is no attachment. This is why it has been said, does the Father come in the form of a lover (*aashuk*) or a beloved (*mashuk*)? (Someone said: In the form of a beloved.) Why? A lover becomes attached to others, he develops attachment and what about the beloved? Many lovers start loving one beloved. So, this one is such an unlimited beloved one who himself does not entangle in anyone, but the world of 500-700 crores (5-7 billion), whether they are the ones who suffer punishments and whether they are the ones who don't suffer punishments; everybody's intellect will become so attached in that one that all will follow him. Where will they go? They will go home.

समयः 29.03-32.39

जिज्ञासुः बाबा, तो आपको सजनी के रूप में याद कर सकते हैं ना?

बाबा: मेरे को काहे के लिए सजनी के रूप में याद करते हो? मैं तो ढाढ़ी-मूंछ वाला हूँ, रोज ढाढ़ी बनानी पड़ती है। सजनी को तो ढाढ़ी ही नहीं होती है। मेरी बात नहीं है। आप ये गलत बात बोल रहे हैं। मेरे को सजनी के रूप में कैसे याद करेंगे?

जिज्ञासु: आपके अन्दर शिवबाबा को सर्व सम्बन्ध के रूप में याद करना है ना ।

Time: 29.03-32.39

Student: Baba, so we can remember you as our wife, can't we?

Baba: Why do you remember me as your wife? I have beard and moustache. I have to shave everyday. A wife does not have a beard at all. It is not about me. You are telling the wrong thing. How will you remember me as your wife?

Student: We have to remember Shivbaba in you by all the relationships, haven't we?

बाबा: वो शिव बाबा कहते हैं, वो बात सही है। वो शिवबाबा कहते हैं; शिव बाबा जो कहते हैं और शिव बाबा का कहा हुआ जो बच्चे सुनते हैं, समझते हैं वो एक ही तरह का पार्ट बजावेंगे या दोगला पार्ट बजावेंगे? एक ही तरह का पार्ट बजावेंगे। तन, मन, धन, अपने पत्नी, बाल, बच्चे अर्पण कर

देंगे तो फिर वापस लेने वाले नहीं है। बेवकूफ बनाने वाले नहीं हो सकते। अगर बेवकूफ बनाते हैं .... क्या? देकरके फिर वापस ले लेते हैं, चांडाल का पार्ट बजाते हैं तो वो भगवान समझते हैं कि ऊपर से कहते हैं भगवान? ऊपर से कहते हैं भगवान। वास्तव में वो भगवान है नहीं उनके दृष्टि में।

Baba: Shivbaba says that, it is all right. Shivbaba says that; those who call him 'Shivbaba' and will the children who listen, understand the words spoken by Shivbaba play only one kind of part or will they play dual role? They will play only one kind of role. If they surrender their body, mind, wealth, wife, children, they will not take it back. They cannot make anyone fool. If they fool someone …..What? If they give [something] and then take it back, if they play the part of a *chandal* (cremator), then do they think him (the one in whom the Supreme Soul enters) God or do they call him 'God' artificially? They call him God artificially. Actually, He is not God in their eyes.

जैसे देवताओं को अमृत बाँटा गया, असुरों को भी बाँटा गया। पहले किसको बाँटा गया? देवताओं को बाँटा गया। देवताओं का नम्बर लगा तो उसमें कौन घुसके बैठ गया? असुर घुसके बैठ गया। तो वो असुर अपने को ये दिखाता है कि मैं देवता हूँ या राक्षस हूँ? वो तो यही दिखाएगा, मैं देवता हूँ। तो भगवान को भगवान बाप कहेगा या शैतान कहेगा? क्या कहेगा? बाप ही कहेगा। लेकिन भगवान तो बड़ा छुपा रुस्तम है। ऐसा छुपा रुस्तम है जिसके लिए कहा जाता है छुपा रुस्तम बाद में खुले। क्या? बाद में खुलेगा या कोई अभी प्रत्यक्ष कर सकता है? कोई कहे कि हम तो कागज में चित्र छपा देंगे, फोटो छपा देंगे, अभी प्रत्यक्ष कर देंगे। तो हो जायेगा? बिल्कुल नहीं हो सकता। अपनी चलन से, अपने चेहरे से, अपने चरित्र से ही भगवान बाप को प्रत्यक्ष किया जा सकता है। चित्र छपाकर प्रत्यक्ष करना, ये तो भक्तिमार्ग में होता आया बहुत। द्वापरयुग से 63 जन्म से प्रत्यक्ष करते आए भगवान को। भगवान प्रत्यक्ष हुआ क्या? नहीं हुआ। अभी संगमयुग में प्रत्यक्ष हो जायेगा क्या? हम दूसरों को समझायें और कहें आप भगवान हैं, आप हमें जवाब दो, भगवान हैं कि नहीं। तो भगवान मान लेगा? अरे, वो तो गुरु लोग होते हैं जो उनसे कहो - 'भगवान, महाराज', तो स्वीकार कर लेते हैं हाँ, हम भगवान है। महाराज है।

For example, when nectar was distributed among the deities, it was also distributed to the demons. To whom was it distributed first? It was distributed to the deities [first]. When the turn of the deities came, who came stealthily and sat among them (in the queue to receive the nectar)? A demon sat stealthily amidst them. So, does that demon show himself to be a deity or a demon? He will indeed show that he is a deity. So, will he call God as God the Father or a demon? What will he call him? He will call him the Father only. But God is a big hidden rostum (hidden hero). He is such a hidden rostum for whom it is said, the hidden rostum is revealed in the end. What? Will he be revealed later

on or can anyone reveal him now? If anyone says, I will get picture printed on papers, I will get photographs printed, I will reveal him immediately so, will he be revealed? He cannot [be revealed at all]. God the Father can be revealed only through our behaviour, our face, our character. Revealing Him by getting pictures printed has been happening a lot in the path of *bhakti* (devotion). You have been revealing God since the Copper Age for 63 births. Was God revealed? No. Will he be revealed now in the Confluence Age? If we explain to others and say [him], you are God; give me an answer as to whether you are God or not? Will God accept? Arey, it is about those *gurus* that if you say them, *'Bhagwan, Maharaj'*, they accept [the salutations, saying], Yes, "I am God, I am *Maharaj*."

Extracts-Part-5

जिज्ञासु: बाबा, उनका कहना है जो साकार शरीरधारी 63 जन्म में सजनी बनता है पर 63 जन्म में तो शिव होता ही नहीं है। सम्बन्ध तो अपने संगम पर जोड़ना है तो वो 63 जन्मों का हिसाब ले रहे हैं?

बाबा: यहाँ जो सम्बन्ध जुड़ते हैं वो शिव के साथ...जिनकी बुद्धि में रहता है हमने शिव के साथ सम्बन्ध जोड़ा, वो आत्मायें पवित्र बनेंगी जन्म-जन्मांतर के लिए या अपवित्र बनेंगी? पवित्र बनेंगी ना? और जो सबसे जास्ती पवित्र बनने वालों की लिस्ट में होगा, वो औरों-2 के सम्बन्ध में आवेगा क्या? जैसे विजयमाला की हेड। एवर प्योर के साथ एक सम्बन्ध जोड़ करके पक्का रखती है। औरों के साथ व्यभिचार में दृष्टि से, वृत्ति से, वाचा में नहीं आती है। तो अनेक जन्मों तक उसका जो सम्बन्ध जुडेगा और एक के साथ जुडेगा, वो राजा के रूप में जुडेगा या रानी के रूप में जुडेगा? रानी के रूप में जुडेगा। वो भगवान और वो जन्म जन्मांतर के लिए भक्त। 'तुम सब भक्तियाँ हो, तुम सब सीतायें हो।' वो तो पवित्र रहने वालों की दृष्टि हैं। और जो भारत के राजायें हैं उनकी कैसी दृष्टि है? विकारी दृष्टि वाले हैं। और पता नहीं कौन -2 से धर्म में जाके गिरने वाले हैं।

Student: Baba he wants to say that the corporeal one becomes a wife in [some births from among] 63 births, but Shiv is not present in 63 births. Relationships are to be established in the Confluence Age; so he is taking it on the account of 63 births.

Baba: The relationships that are established here are with Shiv.....will the souls in whose intellect it is seated that they have established relationship with Shiv, become pure for many births or will they become impure? They will become pure, will they not? And will the one who is included in the list of those who become purest establish relationship with others? For example the head of the *Vijaymala* (the rosary of victory), she establishes relationship with the ever pure one and keeps it firm. She does not indulge in adultery through vision, vibrations or words with others. So, the relationship she establishes for many births, the relationship that she establishes with one, will it be

established in the form of a king or in the form of a queen? It will be established in the form of a queen. He (Narayan) is *Bhagwan* and she is a *bhakt* (devotee) for many births. (It is said in the Murlis that) "You all are devotees, you all are Sitas." That is a vision of those who remain pure and what kind of a vision do those who are kings of India have? They have a vicious vision and no one knows in which religions are they going to and fall.

जिज्ञासु: तो बाबा, 63 जन्मों में विजयमाला के हेड के साथ आप ही के साथ सम्बन्ध रहेगा क्या? नहीं रहेगा ना।

बाबा: जो सर्व सम्बन्ध सर्व आत्माओं के साथ खोलकरके सबको छूट दे रहा है उसकी शूटिंग एक के साथ होगी या अनेकों के साथ होगी? (किसी ने कहा: एक के साथ।) नहीं? जिसमें प्रवेश करता है उसके लिए लागू होता है। वो ऊपर वाला कुछ नहीं लेता है। न लेता है, न देता है। ये तो जिनके साथ सम्बन्ध जुड़ते हैं, उस एवर प्योर के साथ उनके बुद्धियोग की बात है। तो, जो बच्चे एक के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ने वाले हैं उनमें रुद्रमाला के मणके भी है और विजयमाला के भी मणके होंगे। ज्यादा प्रश्नों की झडी़ रुद्रमाला के मणकों की बुद्धि में आयेगी या विजयमाला के मणकों के बुद्धि में आवेगी? (किसी ने कहा: रुद्रमाला के मणकों के बुद्धि में।) क्यों? उसमें भी, रुद्रमाला में भी, जो असल सूर्यवंशी होंगे उनकी बुद्धि में विरोधाभास के संकल्प ज्यादा आयेंगे या जो और-2 धर्मों में कन्वर्ट होने वाले, और-2 धर्मों के छिलके वाले होंगे, उनकी बुद्धि में ज्यादा प्रश्न आवेंगे? और-2 धर्मों में जाने वाले होंगे तो प्रश्नों की झडी़ भी लगेगी ज्यादा। तो अन्तर स्पष्ट हो गया। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि बन जाती है। वो सुप्रीम सोल शिव, वो तो सबके लिए एक जैसा है लैकिन लेने वाले नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है।

Student: So, Baba will the head of *Vijaymala* have a relationship with you alone for 63 births? It will not be, will it?

Baba: Will the shooting of the one who is giving the freedom to all the souls to establish all the relationships with him take place with one or with many? (Someone said: with one). No? It is applicable to the one in whom He enters. The above one (the Supreme Soul) does not take anything. He neither takes nor gives. It is about the connection of the intellect of the ones with whom the relationships are established, with that *ever pure*. So, the children who establish all the relationships with the One include the beads of the rosary of *Rudra* (*Rudramala*) as well as the beads of the rosary of victory. Will there be queue of questions more in the intellect of the beads of the *Rudramala* or in the intellect of the beads of the *Vijaymala*? (Someone said: in the intellect of the beads of the *Rudramala*). Why? Even among them, even in the *Rudramala*, will opposite thoughts emerge more in the intellect of the true *Suryavanshis* (of the Sun dynasty) or will more questions emerge in the intellect of those who are going to convert to other religions, those with a peel of other religions? If they are the ones who are going to fall in other religions, the queue of questions

arising will also be more. So, the difference became clear. As is the vision, so the world becomes. The Supreme Soul Shiv treats everyone equally, but the takers are number wise, as per their *purusharth* (special effort for the soul).

जिज्ञासु: तो बाबा, ये ईश्वरीय पढ़ाई है ना। पढ़ाई में प्रश्न नहीं होगा क्या?

बाबा: पढ़ने वाले एक हैं या अनेक हैं?

जिज्ञासु: अनेक है पढ़ने वाले।

बाबा: अगर ये नियम हो कि पढ़ाई है तो प्रश्न पैदा जरूर होना चाहिए तो सबके प्रश्न पैदा होने चाहिए या कोई-2 के ही पैदा होने चाहिए? सबके होने चाहिए? पढ़ाई है और ये नियम हो कि पढ़ाई है तो प्रश्न सबके अन्दर आना चाहिए?

जिज्ञासु: भेड़-बकरियों के अन्दर प्रश्न क्या आता है?

बाबा: भेड़-बकरियों में प्रश्न नहीं आयेगा? भेड़ बकरिया में-4, ट्रां-2 करती रहेंगी क्योंकि समझती नहीं है। जो एक बार में समझे सो देवता, जो बार-2 कहने से समझे सो मनुष्य और बार-2 समझने और समझाने पर भी, और कहने पर भी न समझे सो गधा।

Student: So Baba, this is a Godly study, isn't it? Will there not be questions in the study?
Baba: Is there one student or are there many?
Student: There are many students.
Baba: If there is a rule that "if it is a study, questions should definitely arise", should questions arise in [the intellect of] everyone or should questions arise [in the intellect of] only few? Should questions arise [in the intellect of] everyone? It is a study and there is a rule that if it is a study, questions should arise [in the intellect of] everyone?
Student: What questions will emerge in [the intellect of] sheep and goats?
Baba: Will questions not arise in [the intellect of] sheep and goats? Sheep and goats will keep crying *'mei, mei', 'tra, tra'* (bleating) because they do not understand. The one who understands in one go is a deity; the one who understands on being told repeatedly is a human being and the one who does not understand even on understanding and being explained and said repeatedly is a donkey.

जिज्ञासु: दो रूप में प्रश्न का जवाब मिलता। कौनसा सही सोचकर बुध्दि चलती ना। बुद्धि का ताला आप ही तो खोला है।

बाबा: खुल गया?

जिज्ञासु: आप ही खोले ना बुध्दि का चाबी।

बाबा: खुल गया? अगर खुल गया तो प्रश्न खत्म। अर्जुन ने प्रश्न कब तक किये? जब तक अर्जुन

की बुद्धि का ताला बन्द तब तक अर्जुन प्रश्न करता है और बुद्धि का ताला खुल गया तो प्रश्न खत्म। जो करोगे, जो कहोगे सो करेंगे। करिष्ये वचनम् तव।

जिज्ञासु: तो बाबा, जिनके मन में प्रश्न नहीं चलता, फिर ये सब सूर्यवंशी है?

बाबा: जिनके मन में प्रश्न नहीं उठता है तो निश्चय बुद्धि की निशानी - निश्चिंत। कोई भी प्रकार की उनको चिंता पैदा नहीं होगी और जो निश्चिंत होते हैं वो प्रश्नचित्त होते हैं या प्रसन्नचित्त होते हैं? प्रसन्नचित्त होंगे तो कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होगा।

जिज्ञासु: नहीं होता बाबा। सीढ़ी उतरने के बाद प्रश्न चालू होता है।

बाबा: तो उतर रहे होंगे। प्रश्न आता है माना सीढ़ी उतर रहे हैं और प्रश्न नहीं आता है.... करिष्ये वचनम् तव। पाना था.....(सबने कहा: सो पा लिया।) जो ज्ञान पाना था सो पा लिया, अब हमें कुछ नहीं पाना।

Student: We find the answers to our questions in 2 forms; the intellect works thinking 'which one is right', does it not? You yourself have unlocked the lock of the intellect.

Baba: Has it opened?

Student: You yourself opened the lock of the intellect.

Baba: Has it opened? If it has opened, the questions will end. Until when did Arjun raise questions? Until Arjun's intellect is locked, he raises questions and when his intellect is unlocked, the questions end. [He says] I shall do whatever you do, whatever you say. *Karishye vachanam tav* (I shall do whatever you say).

Student: So Baba, the ones in whose intellect questions do not arise are all *Suryavanshis*?

Baba: If questions do not arise in someone's intellect; the indication of the one with a faithful intellect is [he will be] carefree (*nishchint*). He will not have any kind of worries. And are the ones who are carefree, is their mind full of questions or are they joyful? They are joyful. So, questions will not arise in their mind at all.

Student: Baba, it does not happen so. Questions emerge when we come down the ladder.

Baba: So, you must be coming down [the ladder]. If questions emerge, it means that you are climbing down the ladder and if questions do not emerge…..*karishye vachanam tav*. Whatever we wanted….. (Everyone said: we have gained it.) We have obtained whatever knowledge we had to obtain. Now we do not have to achieve anything.

जिज्ञासु: बकरियाँ ऐसे ही बोलते हैं।.....

बाबा: बकरियाँ ऐसे बोलती है निश्व्य बुद्धि पूर्वक?

जिज्ञासु: हमको अन्दर निश्चय है। प्रश्न का समाधान पूछा है, हम तो छोटे बच्चे हैं। जैसे ब्रह्मा बेबी-बुद्धि है ना। हमारी बुद्धि बेबी है।

बाबा: अच्छा?

जिज्ञासु: इसलिए जवाब पूछ रहे हैं। जवाब पूछना गलत है क्या?
बाबा: जवाब पूछा नहीं जाता। प्रश्न पूछा जाता है।
Student: Goats speak like this only……..
Baba: Do the goats speak like this with a faithful intellect?
Student: I have faith within. I have just asked for the solution to my question. We are small children. Just as Brahma has a baby-like intellect, our intellect is also baby-like.
Baba: Is it really?
Student: This is why I am asking answers. Is it wrong to ask answers?
Baba: Answers are not asked. Questions are asked.

जिज्ञासु: वो प्रश्न नहीं। प्रश्न पूछना दूसरे धर्म में जाना है क्या?
बाबा: नहीं-2। यहाँ तो कहते हैं जो ज्यादा से ज्यादा प्रश्न पूछने वाले इस सभा में होते हैं और ज्यादा से ज्यादा धर्मों में कन्वर्ट होने वाले होते हैं उनको भी कन्वर्ट करके सूर्यवंशी बनाके छोड़ना है। क्या? सूर्यवंशी बनाके छोड़ना है। ऐसे नहीं हो सकता कि वो और धर्म में कन्वर्ट हो करके चले जाए और उनके जन्म कम हो जाये। नहीं। जो भी बीज है चाहे मोटा छिलका चढ़ा हुआ हो, चाहे छिलकों की ज्यादा परतें चढ़ी हुई हो लेकिन उनको, बीजों को 84 जन्म जरूर लेना है। इस लिस्ट में लाना है। इसलिए ये तो सवाल ही नहीं होता कि प्रश्न पूछना बन्द कर दो।
Student: It is not a question. Do I want to go into another religion by asking questions?
Baba: No, no. Here, it is said that those who ask maximum questions in this gathering and those who convert into maximum number of religions, they too should be converted [back] and made *Suryavanshis*. What? They have to be made *Suryavanshis*. It cannot be possible that they convert to other religions and their number of births decrease. No. All the seeds, whether they are covered by a thick peel or are covered by more layers of peels, but they, those seeds have certainly to take 84 births. They have to be brought to this list. This is why; this point does not arise at all that you should stop asking questions.

यहाँ प्रश्नोत्तर की झड़ी नहीं लगेगी, काट और प्रत्यकाट, सवाल और जवाब नहीं होगा, प्रहार और आहार नहीं होगा तो फिर वहाँ युद्ध कैसे होंगे? यहाँ सूक्ष्म में युद्ध होता है और वहाँ स्थूल में युद्ध होता है। यहाँ है सूक्ष्म ज्ञान की मार-काट और वहाँ होगी तीर तलवारों की मार-काट। यहाँ का स्वदर्शन चक्र है - असुरों के गले काटता है। प्रश्न काहे में से निकलते हैं? गले में से प्रश्न निकलते हैं और जितना देहभान होगा उतना ज्यादा प्रश्न निकलेंगे और प्रश्नचित्त पैदा करने वाली प्रवेश करने वाली आत्मायें होती है। जो आत्मिक स्थिति नहीं धारण कर पाते उनमें दूसरी आत्माओं का

प्रवेश होता है। जो पक्की आत्मिक स्थिति वाली सूर्यवंशी आत्मायें हैं उनमें कोई प्रश्न पैदा ही नहीं होगा। क्योंकि वो जन्म-जन्मांतर एक को फ़ॉलो करने वाले बने हैं।

If there is no queue of questions here, if there is no rejection and acceptance, if there are no questions and answers, if there is no attack and counter-attack here, how will wars take place there (in the broad drama)? Here, the war takes place in a subtle form and there it takes place in a physical form. Here it is bloodshed of subtle knowledge and there it will be bloodshed through arrows and swords. The *swadarshan chakra* here cuts the throats of demons. From where do the questions emerge? Questions emerge from the throat and the more there is body consciousness, the more questions will arise and it is the souls that enter, which makes the person have questions in his mind. Other souls enter in the ones who are unable to imbibe soul conscious stage. No questions will emerge at all in the minds of those who are *Suryavanshi* souls with firm soul conscious stage because they have been the followers of one in many births.

जिज्ञासु: मुन्डि (सर) हिलाने वाले हैं।

बाबा: मुन्डि जो हिलाने वाले होते है वो भी भगवान को अपना भगवान मानने वाले होते है ना? होते हैं ना भक्तिमार्ग में? तो वो शूटिंग कहाँ होती है? वो भी असली शूटिंग कहाँ होती है? यहीं ब्राह्मणों की दुनिया में। कोई पक्के भक्त होते हैं। वो कभी कंवर्ट नहीं होते हैं।

जिज्ञासु: हम कच्चे भक्त है क्या बाबा?

बाबा: जरूर कन्वर्ट होंगे।

जिज्ञासु: आप छोडेंगे नहीं ना मुझे?

बाबा: बिल्कुल नहीं। क्यों छोड़ने का क्या सवाल?

जिज्ञासु: मैं दूसरे धर्म में गया तो आप छोडेंगे क्या?

बाबा: जो भक्त होते हैं वो अनेक प्रकार के भक्त होते हैं या एक प्रकार के भक्त होते हैं? नौधा भक्ति कही जाती है। तो धर्म भी नौ प्रकार के हैं।

Student: They are the one who shake their heads.

Baba: Those who shake their heads also consider God as their God, don't they? Such ones are there in the path of *bhakti* (devotion), aren't there? So, where does that shooting take place? Where does that true shooting also take place? Here, in the world of Brahmins itself. There are some firm devotees; they never convert.

Student: Baba, are we weak devotees?

Baba: You will certainly convert.

Student: You will not leave me, will you?

Baba: Not at all. Where is the question of leaving?

Student: If I go to other religion, will you leave me?

Baba: Are there different kind of devotees or are they of one kind? *Bhakti* is said to be of nine kinds. So, religions are also of nine kinds.

जिज्ञासु: आगे चलके प्रश्न पूछना बन्द करेंगे, हम भी आत्मिक स्वरूप में रहेंगे।
बाबा: क्यों बन्द करेंगे? अन्दर अगर कचड़ा भरा हुआ हो और कचडे को बाहर न निकाला जाए तो पेट फटेगा या रह जायेगा? पेट फट जायेगा।
जिज्ञासु: आत्मिक स्थिति में कचड़ा भी बाहर निकाल देंगे। आत्मिक स्थिति में कचड़ा को बाहर निकालना चाहिए नहीं निकालना चाहिए?
बाबा: आत्मिक स्थिति बनती ही तब है जब हम भगवान बाप की एक्युरेट मत पर चले। अगर औरों-2 की सुनते रहते हैं तो देहभान बढेगा या घटेगा? बढेगा।
Student: I will stop asking questions in future, I too will remain in the soul conscious stage.
Baba: Why will you stop [questioning]? If there is garbage inside and if the garbage is not removed, then will the stomach burst or remain intact? The stomach will burst.
Student: We will also remove the garbage in the soul conscious stage. Should we remove the garbage by remaining in the soul conscious stage or not?
Baba: The soul conscious stage is formed only when we follow the *accurate* directions of God the Father. If we keep listening to others, will the body consciousness increase or decrease? It will increase.

जिज्ञासु: मन का सुन रहे हैं, औरों का तो नहीं सुन रहे हैं।
बाबा: मनमत पर चल रहे है?
जिज्ञासु: नहीं, नहीं। और किसकी बात सुनते? कौन है आपसे बढ़कर? माई का लाल कौन है आपसे बढ़कर?
बाबा: ये तो जब प्रत्यक्ष होते हैं पार्ट और जब माला में नम्बर प्रत्यक्ष होते हैं तब ही सबका पता चलता है कि 63 जन्मों में कौन कितने कन्वर्ट हो करके रहे हैं और कौन कितने एक के ऊपर आस्था रख करके चले हैं? आदि से अंत तक राम और कृष्ण को फॉलो करने वाले बहुत थोडे हैं। बाकि सारे ही देवतायें कन्वर्ट होने वाले हैं। कन्वर्ट होने वालों की लिस्ट ज्यादा है या अपने धर्म पर पक्के होने वालों की लिस्ट ज्यादा है?
जिज्ञासु: कन्वर्ट होना फायदा है घाटा है?
बाबा: स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह।
Student: I am listening to my mind; I am not listening to others.
Baba: Are you following your own opinion?

Student: No, no. Whom else do I listen to? Who is greater than you? Who is the son of a mother greater than you?
Baba: When the parts are revealed and when the numbers in the rosary are revealed, only then we come to know about everyone as to how long has one been converted in 63 births and who has maintained faith on one and followed to what extent? There are very few who have followed Ram and Krishna from the beginning to the end. All the other deities convert. Is the list of those who convert big or is the list of those who remain steadfast in their religion big?
Student: Is it beneficial or harmful to convert?
Baba: *Swadharme nidhanam shreyah pardharmo bhayavah* (It is better to die in one's own religion; others' religion is fearful).

Extracts-Part-6

समयः 53.22-55.00

जिज्ञासुः 100 कंगूरें खाए बिल्ली हज को चली माना?

बाबा: हाँ।100-100 चूहें खाए बिलैया हज को चली। बिल्ली जो है उसके लिए कहावत बनाई है कि 100 चूहें खा लिए, 100 चूहों की हत्या कर ली और वो हत्या करने के बाद वो माया बिल्ली भगवान के पास, भगवान से मिलने के लिए हज को जा रही है। ये कहावत कहाँ से पड़ती है? ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में ये कहावतें सिद्ध होती है। जो माला के 100 मणके हैं उनको माया अपने कंट्रोल में कर लेती है, उनकी हत्या कर देती है या 108 के मणकों में जो 8 मणके हैं उनकी हत्या कर पाती है? 100 की हत्या कर देती है। वो 100 चूहें हैं जिनके ऊपर देहअभिमानी, साहबजादे गणेशजी सवारी करते हैं। गणेशजी की सवारी किसके ऊपर दिखाते हैं? चूहों के ऊपर।

जिज्ञासुः तो मैं बड़ा चूहा हूँ बाबा।

बाबा: ज्यादा मांस होगा तो कहेंगे बड़ा चूहा और सीकिया पहलवान होगा तो कहेंगे छोटा चूहा।

Time: 53.22-55.00
Student: What is meant by 'the female cat went for *Haj* (pilgrimage to Mecca) after eating 100 rats'?
Baba: Yes. The female cat went for *Haj* pilgrimage after eating 100 rats. There is a saying about the female cat that after she ate 100 rats, after having killed 100 rats; the *Maya* cat is going to God, to meet God, going for *Haj* pilgrimage. When does this saying emerge? These sayings are proved in the Confluence Age world of Brahmins. Does *Maya* take the 100 beads of the rosary under her control, does she kill **them** or is she able to kill the 8 beads among the 108 beads? She kills the 100

beads. They are the 100 rats on whom the body conscious, son Ganesh*ji* rides. What is Ganesh*ji* shown to ride upon? On rats.
Student: So, I am a big rat Baba.
Baba: If there is more meat, it will be said to be a big rat and if it is frail and weak wrestler, it will be said to be a small rat.

समयः 55.25-57.10

जिज्ञासुः बाबा, एक जन्म स्त्री और एक जन्म पुरुष के होते है तो जब छोटी माँ पुरुष जन्म लेती है तब क्या वो एक ही शादी करती है या ढेर सारी रानियाँ रखती है।
बाबा: उसके अन्दर संस्कार व्यभिचार के हैं या अव्यभिचार के संस्कार है? (किसी ने कहा: अव्यभिचार के।) तो जिसके अन्दर संगमयुग में अव्यभिचार के संस्कार पडे हैं वो चाहे स्त्री का जन्म ले और चाहे पुरुष का जन्म ले, वो अव्यभिचारी राजा दुर्गादास का पार्ट बजाएगा या व्यभिचारी राजा का पार्ट बजाएगा? अव्यभिचारी पार्ट ही बजाएगा। अच्छा राजा बनेगा और राजा बनने की तो बात ही नहीं, विजयमाला में। विजयमाला के मणके जन्म-जन्मांतर रानी बनने के स्वभाव वाले हैं, आधीन होकरके रहने वाले स्वभाव वाले हैं या राजा बनने के स्वाधीन स्वभाव वाले हैं? आधीन तो रहना है लेकिन ऊँच ते ऊँच के आधीन रहना है, ऐसे स्वभाव वाले हैं। तो राजा बनने की तो बात ही नहीं है। राजाओं को ज्यादा कष्ट होता है द्वापर, कलियुग द्वैतवादी दुनिया में या रानियों को ज्यादा कष्ट होता है? राजाओं को ज्यादा मार-काट झेलनी पड़ती है।
Time: 55.25-57.10
Student: Baba, one birth is in the form of a female and one birth as a male, so, when the junior mother (*choti ma*) takes birth as a male, does she make only one marriage or does she keep many queens?
Baba: Does she have *sanskars* of adultery or purity? (Someone said: of purity.) So, the one in whom the *sanskars* of purity are recorded in the Confluence Age, whether she takes a female birth or a male birth, will she play the part of an unadulterous King Durgadas or will she play the part of an adulterous king? She will indeed play an unadulterous part. He/she will become a good king; however, there is no question of becoming kings [for the beads] in the *Vijaymala* (the rosary of victory) at all. Do the beads of the *Vijaymala* have the nature of becoming queens for many births, do they have the nature of living as subordinates or do they have the independent nature of becoming kings? They do have to remain subordinates, but they have the nature of remaining subordinates to the highest on high. So, there is no question of becoming kings at all. Do the kings face more difficulties in the dualistic world of the Copper Age and the Iron Age or do the queens face more difficulties? The kings have to face more bloodshed.

जिज्ञासुः बाबा, रानियों को ज्यादा कष्ट भी होता है ना?

बाबा: नहीं होता है।

जिज्ञासु: 9 महीने बच्चे को पालती है, वो इतना परेशान होती है।

बाबा: वो एक बात अलग। वो तो कोई भी ऐसा नहीं होता है जिसको 9 महीने ना पालना पडे; चाहे रुद्रमाला का मणका हो और चाहे विजयमाला का मणका हो।

Student: Baba, the queens also face more difficulties, don't they?
Baba: No, they don't.
Student: They bear the fetus for 9 months; they face so many problems.
Baba: That is a different thing. There is nobody who does not have to bear [the child] for 9 months; whether it is the bead of the *Rudramala* (rosary of *Rudra*) or the bead of the *Vijaymala*.

समयः 57.13-58.50

जिज्ञासुः बाबा, कहते हैं रुद्रमाला के मणके अपनी बुद्धि लगाए बिना नहीं रह सकते?

बाबा: बुद्धिमान बाप के बुद्धिमान बच्चे हैं। तो बुद्धिमान बाप के बच्चे जो हैं, ये तो हो सकता है कि अनेकों की बुद्धियों से प्रभावित हो करके व्यभिचारी बुद्धि वाले बन जाए लेकिन ये नहीं हो सकता कि वो बुद्धि को चलाए ही नहीं। बुद्धिमान बाप के बच्चे हैं तो बुद्धि तो जरूर चलायेंगे। कोई एक से बुद्धि का वरदान लेने वाले हैं और कोई अनेकों से बुद्धि का वरदान लेने वाले हैं। जो एक से बुद्धि का वरदान लेने वाले हैं उनकी पहचान क्या होगी? उनकी पहचान होगी, वो एक से ही सुनेंगे। क्या? ब्राह्मणों की दुनिया में वो ब्राह्मण जो एक से ही वरदान लेने वाले हैं, और-2 धर्मों में कन्वर्ट होने वाले नहीं है, वो सारे ब्राह्मण जीवन में बुद्धि का पाँव एक नाव में रखेंगे। अनिश्चय बुद्धि होकर औरों-2 से ज्ञान नहीं सुनेंगे। क़्योंकि मुरली में बोला है, अगर औरों-2 से भी सुनकरके धारण किया तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा। व्यभिचारी ज्ञान होगा तो प्राप्ति भी व्यभिचारी हो जावेगी।

Time: 57.13-58.50
Student: Baba, it is said that the beads of the *Rudramala* cannot avoid using their brains?
Baba: They are intelligent children of the intelligent Father. So, as regards the children of the intelligent Father, it is possible that they are influenced by the intellects of many and develop an adulterous intellect, but it is not possible that they do not use their intellect at all. If they are children of the intelligent Father, they will certainly use their intellect. Some obtain the boon of intellect from one and some obtain the boon of intellect from many. What will be the indication of those who obtain the boon of intellect from one? Their indication is that they will listen only from one. What? In the world of Brahmins, the Brahmins who obtain the boon [of intellect] from only one, those who are not going to convert to other religions, will place their leg of intellect only in one boat in the entire Brahmin life. They will not develop a doubtful intellect and listen to knowledge from others

because it has been said in *Murli*, even if you listen from others and inculcate it (the knowledge), it will become an adulterous knowledge. If the knowledge becomes adulterous, the attainments obtained will also become adulterous.

समयः 58.52-59.50

जिज्ञासुः मुरली का एक भी पॉईंट मिस नहीं करना, हर पॉईंट पर विचार सागर मंथन करना है। कोई टेप रिकॉडर कैसेट से, वी.सी.डी से कोई प्रश्न का हल नहीं निकलता। बाप साकार में आता है, प्रैक्टिकल में आता है तो पूछ के वेरिफाय कर लेना चाहिए, क्लियर कर लेना चहिए।

बाबा: ठीक है।

जिज्ञासु: तो प्रश्न तो पैदा होता ही है।

बाबा: सबको नहीं प्रश्न पैदा होता है।

जिज्ञासु: विचार सागर मंथन करे तो.....

बाबा: अपनी बात को सबके ऊपर लागू नहीं कर देना चाहिए। हाँ, ये कहेंगे कि कोई प्रश्नचित्त ज्यादा बनते हैं और कोई प्रसन्नचित्त ज्यादा बनते हैं। प्रश्नचित्त ज्यादा बनते हैं इससे साबित होता है कि ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में रहकरके जब उन्होंने पार्ट बजाया है तो अनेकों-2 की बातें भी सुनी है। एक की बात सुनकरके संतुष्ट नहीं हुए।

Time: 58.52-59.50

Student: We should not miss even a single point of *Murli*; we have to think and churn on every point. No solution is obtained from tape recorder cassettes, VCDs. When the Father comes in corporeal form in practical, you should ask and verify, you should clear [the doubts].

Baba: It is correct.

Student: So, questions do arise.

Baba: Questions do not arise in the minds of everyone.

Student: If we think and churn…….

Baba: You should not apply your case to everyone. Yes, it can be said that questions arise more in the minds of some (*prashnachitt*) and some remain more joyful (*prasanchitt*). If more questions arise in someone's mind, it proves that when they played a part while living in the Confluence Age world of Brahmins, they have also listened from many. They did not feel contended on listening from one.

समयः 59.53 -01.02.08

जिज्ञासुः बाबा, रामायण में दिखाते हैं राम ने अपनी सीता को अग्निदेव के पास रखा और सोने की सीता को रावण ने चुरा लिया और अभी जो छोटी माता है जो नायरोबी में है, भले केनिया या

अफ्रीका कहो वहाँ जो लक्ष्मी, छोटी माँ है उनको सोने की कहेंगे या असली कहेंगे? मतलब जब तक अपने नारायण के साथ है.....

बाबा: सोना और पावक रंग तो एक ही जैसा होता है लगभग। सोना जड़त्वमय होता है। सोना क्या है? जड़ तत्व है ना? और अग्नि? अग्नि जड़त्वमई होते हुए भी चैतन्य दिखाई देती है। है दोनों ही सीतायें। एक सीता योगाग्नि रूपी पावक में निवास करती है। क्या? तुम पावक में करो निवासा, तब लगी करौ निशाचर नाशा। असली सीता को कहा तुम योगाग्नि में निवास करो। क्योंकि तुमने दिव्य दृष्टि से पहचान लिया है कि भगवान का असली रूप ये हैं, ज्ञान की दृष्टि से नहीं पहचाना भले। तो तुम पावक में करो निवासा; पावक माना? ज्ञानाग्नि, योगाग्नि। योग की अग्नि में निवास करो और जो नम्बर 2 की सीता है उसको रावण ले जाता है। नहीं तो सच्ची सीता के तन को रावण हाथ भी नहीं लगा सकता।

Time: 59.53-01.02.08

Student: Baba, it is shown in Ramayan that Ram kept his Sita in the custody of the deity of fire *(agnidev)* and the golden Sita was abducted by Ravan. And the present junior mother, who is in Nairobi, call it Kenya or Africa; Lakshmi, the junior mother who is living there; will she be called the golden one or the real one? Meaning up until she is with her Narayan…….

Baba: The colour of gold and fire is almost the same. Gold is inert. What is gold? It is an inert element, isn't it? And what about fire? Despite being inert, fire appears to be living. Both are indeed Sitas. One Sita resides in the fire in the form of *yog*. What? [Ram said to Sita] *Tum pavak mein karo nivasa, tab lagi karau nishachar nasha* (You remain in fire [of yog] until I kill the demons). The true Sita was asked to live in the fire of *yog* because you have recognized through the divine vision, this is the true form of God, although you have not recognized through the eyes of knowledge. So, you reside in fire; what does 'fire' mean? [It means] the fire of knowledge, the fire of *yog*. [You] live in the fire of *yog* and Ravan takes away the number two Sita. Otherwise, Ravan cannot even touch the body of the true Sita.

Extracts-Part-7

समयः 01.02.10 -01.04.10

जिज्ञासुः बाबा, नेक्स्ट टू गॉड इस शंकर या नेक्स्ट टू गॉड इस .... ।

बाबा:..... कृष्ण, प्रजापिता या नारायण।

जिज्ञासु: फिर शंकर की आत्मा को माया का आवरण लगता है, ऐसा मुरली में बोला है।

बाबा: जिसको माया का आवरण लगा हुआ होगा उसको बाप को याद करने की दरकार है या जिसको आवरण ही नहीं होगा उसको बाप को याद करने की दरकार है?

जिज्ञासु: जिसको आवरण नहीं होगा तो...

बाबा: दरकार ही नहीं। और शंकर को हमेशा याद में बैठा हुआ दिखाया जाता है या नहीं दिखाया जाता है? याद में बैठा है माना... शंकर का अर्थ ही है मिक्स। क्या? उसमें जो सदैव सत है, सदा शिव है वो भी प्रवेश है। जो सदा असत है; क्या? पहले जन्म से ही असत उसमें प्रवेश हो जाता है। कृष्ण का जन्म लिया, कृष्ण वाली आत्मा के अन्दर दृष्टि की पावर से सृष्टि को जन्म देने की पावर है या वायब्रेशन की पावर है? तो ये (सर के उपर) है वायब्रेशन जहाँ से निकलता है वायब्रेशन और दृष्टि है नीचे। ज्यादा ऊँची पावर वृत्ति है, वायब्रेशन है या दृष्टि है? वायब्रेशन ऊँचा है। तो कृष्ण की आत्मा थोडी़ नीची स्टेज वाली है और कृष्ण को जन्म देने वाला ऊँच ते ऊँच है। इसलिए अंतर पड़ जाता है।

Time: 01.02.10-01.04.10

Student: Baba, next to God is Shankar or next to God is….

Baba: ...Krishna, Prajapita or Narayan.

Student: Then it has been said in *Murli* that Shankar's soul is covered by *Maya*.

Baba: Is there the need to remember the Father for the one who is covered by *Maya* or is there the need to remember the Father for the one who is not at all covered [by *Maya*]?

Student: The one who is covered …

Baba: There is no need at all [to remember]. And is Shankar always shown to be sitting in remembrance or is he not shown? He is sitting in remembrance means….the very meaning of Shankar is *'mix'*. What? The one who is always truth, always Shiv (i.e. benevolent) is also present in him. The one who is always false; what? Untruth enters in him since the first birth itself. Krishna was born; does the soul of Krishna have the power to procreate through the power of vision or does it have the power of vibrations? This (top of the head) is the place from where the vibrations originate and vision (i.e. eyes) is below. Is the power of vibrations or [that of] vision higher? Vibrations are higher. So, the soul of Krishna is of a slightly lower stage and the one who gives birth to Krishna is the highest on high. That is why a difference appears.

समयः 01.04.11 -01.10.56

जिज्ञासुः बाबा, महाभारत में दिखाते है कि अर्जुन अपनी 18 अक्षोणी सेना को देखकर अपने पितामाहा और गुरुओं को, भाईयों को देख कर कहा, मैं इन सब को मारकर मुझे राज्य नहीं चाहिए, मुझे राजाई नहीं चाहिए। ये पार्ट 36-37 की बात है या दुबारा जन्म लेकर आता है राम वाले व्यक्तित्व 30 नवम्बर 1969 में उस समय की बात है?....

Time: 01.04.11-01.10.56

Student: Baba, it is shown in Mahabharata that Arjun looked at the 18 *akshoni* army, his great-great-grandfather *(Bhishma)*, the *gurus* and brothers and said, I don't want a kingdom that is

achieved by killing all these people; I do not want kingship. Is this part related to the period of [19]36-37 or is it about the period when the personality of Ram is reborn and re-enters [the *yagya*] on 30th November, 1969?

बाबा: ज्ञान कब मिलता है? 76 में राम बाप से ज्ञान मिलता है प्रैक्टिकल में या 36 में पूरा ज्ञान मिलता है? अधूरा ज्ञान कब कहेंगे और पूरा ज्ञान कब कहेंगे?
जिज्ञासु: 36 में तो मुरली चलाया ही नहीं।
बाबा: 36 में भी मुरली चलाते थे। पियु की वाणी प्रसिद्ध है। 36 में भी प्रवेश किया था, गीता के अर्थ बैठ करते थे। जिस गीता की 108 टीकायें निकल चुकी है और हर एक टीका ने हर एक धर्म के फॉलोवर ने उस गीता के अपने तरीके से अर्थ करके दिखा दिए। वो अर्थ करने वाले सब झूठे और यहाँ तो सच्चा है। तो जो सच्चा है वो गीता के अर्थ अपने प्रकार के सच्चे करके नहीं समझाय सकता? जिस गीता की व्याख्या झूठे लोगों ने 108 प्रकार से अपने तरीके से करके दिखा दी उस गीता की व्याख्या भगवान आवेगा तो अपने तरीके से करके नहीं दिखा सकता? यज्ञ के आदि में भी क्या सुनाते थे? वो ही गीता के श्लोक सुनाते थे और उनका अर्थ बैठ समझाते थे। लेकिन उस समय पूरा ज्ञान नहीं था इसलिए छोड़ के चले गए और अभी? अभी तो पूरा ज्ञान है।
Baba: When is knowledge received? Is knowledge received from the Father Ram in [19]76 in practical or is the complete knowledge received in [19]36? When will it be said to be an incomplete knowledge and when will it be called a complete knowledge?
Student: Murli was not narrated at all in [19]36.
Baba: *Murli* was narrated in [19]36 also. *Piu's vani* is famous. Shiv had entered in [19]36 as well; He used to explain the meanings of the Gita, whose 108 commentaries have emerged and in every commentary, followers of every religion have interpreted the Gita in their own way. All those interpreters are false and here it is the true one. So, can't the one who is true make out the true meanings of the Gita and explain? The Gita which has been interpreted by false persons in 108 ways, in their own ways; when God comes can't He interpret that Gita in His own way? What used to be narrated in the beginning of the *yagya* as well? The same *shlokas* (verses) of the Gita used to be narrated and their meanings used to be explained. But there wasn't complete knowledge at that time; this is why they left [the *yagya*] and now? Now there is complete knowledge.

आदि में भी गीता के अर्थ सुनाते थे तो अंत में भी उसी गीता के अर्थ फिर सुनावेंगे। लेकिन अंतर क्या पड़ जावेगा? अंतर एक बात का पडेगा उस समय भी बुद्धियों में बैठा हुआ था गीता का भगवान कृष्ण और जो फ़ॉलो करने वाले थे ज्यादातर बचे थे, वो सारे ही कृष्ण के फॉलोवर थे और अब? अभी ये बात प्रत्यक्ष होने वाली है कि गीता का भगवान साकार में कृष्ण नहीं, गीता का

भगवान निराकारी स्टेज वाला, देह को धारण न करने वाला, देहधारी नहीं है। निराधार पुरुषार्थ करने वाला है। देह में आसक्त होने वाला नहीं है। ये अंतर पड़ जायेगा। सिर्फ एक बात का अंतर। भक्तिमार्ग में गीता का भगवान कौन? कौन बुद्धि में आता था? और अभी गीता का भगवान कौन? वो बुद्धि में आयेगा। बाकी गीता सारी वही रहेगी।

In the beginning, Gita's meanings used to be narrated as well as in the end; the meaning of the same Gita will again be narrated. But what will be the difference? The difference will be of one thing; even at that time it was in the intellects [of people] that God of the Gita is Krishna and most of the followers who were left, they all were the followers of Krishna and now? Now it is going to be revealed that God of the Gita is not Krishna in the corporeal form but God of the Gita is the one who has an incorporeal stage, the one who does not take a body , the one who is not a bodily being. He is the one who does *purusharth* (special effort for the soul) without any support. He does not become attached to a body. This will be the difference, a difference of just one thing. Who is God of the Gita in the path of *bhakti* (devotion)? Who used to come to the intellect? And who is the God of the Gita now; that will come to the intellect. And as for the rest, the Gita will remain the same.

जिज्ञासु: तो बाबा, विजयमाला ज्ञान लेने के बाद गीता का भगवान शिव शंकर भोलेनाथ प्रत्यक्ष होगा या नहीं होगा?

बाबा: बिना ज्ञान के गति होती है क्या? बिना ज्ञान के बुद्धि गतिमान बनेगी?

जिज्ञासु: नहीं बनेगी।

बाबा: फिर? भले कितने भी साक्षात्कार होते रहे। ब्रहमा को साक्षात्कार हो गए क्या बुद्धि गतिमान बनी? ऐसे ही विजयमाला की हेड को कितने ही साक्षात्कार होते रहे, खुशी आवेगी लेकिन सदाकाल की वो खुशी ज्ञान से ही आवेगी।

Student: So, Baba, will God of the Gita [i.e.] Shiv Shankar *Bholenath* (Shiv Shankar, the lord of the innocent ones) be revealed or not after the *Vijaymala* obtains the knowledge?

Baba: Is salvation achieved without knowledge? Will the intellect become dynamic without knowledge?

Student: It will not.

Baba: Then? However much visions they may continue to have. Brahma had visions; did his intellect become dynamic? Similarly, the head of the *Vijaymala* had so many visions; she will experience happiness, but the permanent happiness will be achieved only through knowledge.

जिज्ञासु: बाबा, गीता का भगवान शिव शंकर भोलेनाथ कौनसे इयर से हमें चालू करना है?
बाबा: जब से प्रत्यक्षता हो जाए। जब से चन्द्रमाँ सम्पूर्ण हो जाए। चन्द्रमाँ सम्पूर्ण होगा, पूर्णिमा की रात्री होगी, सम्पूर्ण चन्द्रमाँ अस्त होगा और सूर्य उदय होगा। एक तरफ वो अस्त होगा और दूसरी तरफ वो उदय होगा।
जिज्ञासु: जब तक चन्द्रमाँ बीजरूप स्टेज धारण नहीं करता तब तक गीता का भगवान शिव शंकर भोलेनाथ प्रत्यक्ष होगा या नहीं होगा?
बाबा: वो बाप बेवकूफ है कि बच्चे का कल्याण किए बगैर अपना कल्याण कर ले। वो बाप बाप नहीं है कि बच्चा काम की अग्नि में जलता रहे और अपने को सेफ कर ले। कोई ऐसा बाप होता है? असल में जो बाप होगा वो बच्चा आग लगे हुए घर में जल रहा है और खुद निकलकरके भाग जाए। वो असली बाप है क्या?
Student: Baba, since which year should we calculate Shiv Shankar *Bholenath* as God of the Gita?
Baba: Since the revelation has taken place. Since the Moon has become complete. When the Moon becomes complete, when it is full moon night, when the full Moon sets and the Sun rises. On one side it (i.e. the Moon) will set and on the other side it (i.e. the Sun) will rise.
Student: Until, the Moon achieves the seed-form stage, will God of the Gita Shiv Shankar *Bholenath* be revealed or not?
Baba: The father who reaps benefits for himself without benefiting the child is a fool. That father who makes himself safe while the child is burning in the fire of lust is not fit to be called a father. Is there any such father? If a father is a true father; if his child is burning in the house that has caught fire and if he escapes from the house and runs away, is he a true father?

जिज्ञासु: तो बाबा सन शोज़ फादर बोले ना?
बाबा: हाँ जी।
जिज्ञासु: फादर खुद को तो प्रत्यक्ष नहीं करता। सन शोज़ फादर है ना?
बाबा: हाँ है। आगे बोलो ना।
जिज्ञासु: सन शोज़ फादर है ना?
बाबा: हाँ जी है।
Student: So, Baba has said that 'son shows the Father', hasn't he?
Baba: Yes.
Student: The Father does not reveal Himself. It is the son who shows the Father, isn't it?
Baba: Yes. Speak further, will you not?
Student: The son shows the Father, doesn't he?
Baba: Yes.

जिज्ञासु: खुद को शिवोऽहम् करे तो हिरण्यकश्यप होगा ना, खुद को भगवान कहने से?

बाबा: कहता है क्या? भगवान आएगा तो कहेगा मैं भगवान हूँ? कहेगा?

जिज्ञासु: नहीं कहेगा। बाप पहले बच्चों को प्रत्यक्ष करेगा फिर बच्चे बाप को प्रत्यक्ष करेंगे। कौनसा पहले...?

बाबा: जो ज्यादा ताकतवर होगा सो पहले करेगा।

जिज्ञासु: ताकत तो बाप है।

बाबा: हाँ तो बाप अगर सर्वशक्तिवान है, ज्यादा पावरफुल है तो पहले बच्चों को प्रत्यक्ष करेगा या बच्चे बाप को प्रत्यक्ष कर लेंगे?

जिज्ञासु: जो पावरफुल है वो पहले करेगा।

बाबा: हाँ तो अभी 70 साल हो गए, बच्चे अगर पावरफुल होते तो अभी तक 70 सालों में कुछ किया होता ना? कुछ कर पाए क्या? नहीं कर पाए।

Student: If he calls himself *Shivoham* (I am Shiv), by calling himself God, he will be Hiranyakashyap (a villainous character mentioned on the scriptures), will he not?

Baba: Does he say? If God comes, will he say 'I am God'? Will he say?

Student: He will not. The Father will reveal the children first and then the children will reveal the Father. Which takes place first…?

Baba: The one who is more powerful will do it first.

Student: The Father is power[ful].

Baba: Yes, so if the Father is almighty, if He is more powerful, will He reveal the children first or will the children reveal the Father first?

Student: The one who is powerful will do it first.

Baba: Yes. So, now 70 years have passed. Had the children been powerful, they would have done something in 70 years, wouldn't they have? Were they able to do anything? They were not.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.